प्रश्न :- रीतिकालीन काव्य में रीतिमुक्त कवियों का स्थान बतायें? शेषभाग-5

उत्तर :- शेषभाग :-

5. रचना शैली में अंतर :-

रीतिबद्ध कवियों को आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने शुद्ध भक्त न मानकर प्रेम-मंग का कवि माना है। कृष्ण-भक्ति की ओर उन्मुख होने के कारण व्यक्तिगत जीवन के प्रेम-क्षेत्र में निराशा हुई, जिसके फलस्वरूप वे भगवान की भक्ति में प्रवृत्त हो गये। इनकी रचनाएँ भक्त कवियों के समान नहीं हैं। भक्ति सम्प्रदाय में दीक्षित होने पर भी घनानन्द 'सुजान' को न भूल सके। इन कवियों की आत्माभिव्यक्ति के लिए कृष्ण-लीला सामग्री बन गयी। भक्त कवियों से भिन्न एक अन्य विशेषता इन कवियों में दिखायी देती है। कृष्ण-भक्त कवियों की भक्ति-भावना जहाँ एकनिष्ठ, अनन्य तथा साम्प्रदायिक थी, वहीं इन स्वच्छन्द धारा के कवियों की दृष्टि उदार थी। अतः उन्होंने अन्य देवी-देवताओं की भी अर्चना की। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के अनुसार इनकी उक्तियाँ तथा शृंगारी कवियों - मतिराम, पद्माकर, देव आदि की उक्तियों में विशेष अन्तर नहीं है। शुद्ध भक्त-कवि न होने के कारण इनकी भक्तिपरक रचनाएँ भक्तिकाव्य न होकर भक्तिपरक काव्य के अन्तर्गत आती हैं। इनकी रचनाएँ शैली की दृष्टि से भी भक्त कवियों की रचना से भिन्न हैं। कृष्ण-भक्त कवियों ने गीत, पद, शैली में तथा इन कवियों ने कवित्त, सवैया तथा बीच-बीच में दोहा, सोरठा, छप्पय आदि में काव्य-रचना की है। मनोवृत्ति-तन्मयता, शैली आदि सभी दृष्टियों से ये कवि कृष्ण-राधा सम्बन्धी कविता लिखने पर भक्त-कवि नहीं कहे जा सकते।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है

कि रीतिमुक्त कवियों का ध्यान कला की साज-सँवार पर इतना नहीं था जितना भाव-पक्ष पर। रीतिबद्ध काव्य-परम्परा का उन्होंने खुलकर विरोध किया।

घनानन्द अपना कला सम्बन्धी मत व्यक्त करते हुए लिखते हैं— "लोग हैं लागि कवित्त बनावत, मोहि तो मेरे कवित्त बनावत।" अर्थात अन्य कवि परिश्रम और अभ्यास से कविता लिखते हैं, परन्तु मेरे कवित्तों ने तो स्वयं ही मेरी भावना को बनाया है। इनकी कविता में अनुभूत्यात्मक साज-संवार कम तथा चेतना अधिक है। अलंकार, कवित्त और कवि-रूढ़ियों को इन्होंने भी अपनाया है, जैसे नेग-व्यापार सम्बन्धी उक्तियों में उनका प्राधान्य नहीं है। प्रबन्ध-काव्यों की ओर न तो कृष्ण-भक्त कवियों ने और न रीतिबद्ध कवियों ने ध्यान दिया। सूफी कवियों के समान स्वच्छन्द धारा के कवियों ने भी प्रेम-निबन्ध लिखे हैं, जैसे— आलम का 'माधवानल कामकन्दला' 'सुदामाचरित' और 'श्यामसनेही' तथा बोधा का 'विरह-वारीश' स्वच्छन्द धारा के कवियों में प्रबन्ध की प्रवृत्ति के स्पष्ट संकेत दृष्टिगोचर होते हैं।

6. <u>भाषागत अंतर</u>:—

स्वच्छन्द कवियों की देन भाषा के क्षेत्र में भी कम नहीं है। भाषा के परिष्कृत और प्रांजल रूप पर रीतिबद्ध कवियों की दृष्टि नहीं थी। उन्होंने प्राकृत, अपभ्रंश शब्द प्रयुक्त करके शब्द-रूप एकता की अवहेलना की तथा पश्चिमी ब्रजभाषा और पूर्वी अवधी भाषा के तालमेल द्वारा इनकी भाषा विकृत हो गयी। यह अपराध स्वच्छन्द धारा के कवियों ने नहीं किया।

रीतिमुक्त कवियों की भाषा में लाक्षणिक पदावली की प्रधानता है।

रीतिमुक्त धारा के सभी कवियों का महत्व समान नहीं है, कोई भावुक और वेदनाविह्वल अधिक है, तो कोई संयमी और धीर, कोई रीतिमुक्त, कोई रीतिबद्ध तथा कोई रीतिमुक्त-काव्य की सीमा-रेखा पर खड़ा है। सब एक ही पथ के पथिक होने के कारण एक ओर रीतिबद्ध कवियों से तथा दूसरी ओर शुद्ध भक्त-कवियों से भिन्न हैं। उनकी महत्ता सहज पीड़ाभिव्यक्ति, भावुकता, तन्मयता तथा अनुभूति की गहनता में है।

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

1. रीतिकालीन काव्य में रीतिमुक्त कवियों का योगदान बताइए ?
2. रीतिमुक्त काव्य की परिभाषा देते हुए उसमें घनानन्द का स्थान निर्धारित कीजिए ?

पता :-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)
मो० नं० — 7909046087
दिनांक – 14/02/2022